TORONTO PUBLIC LIBRARY
37131 184 871 259
CED Cedarbrae

त कहानियाँ

बिल्ली और मूसारानी

सभी आयु वर्ग के लिए

Shivani.
Billi aur moosarani.

Digitized by the Internet Archive
in 2023 with funding from
Kahle/Austin Foundation

https://archive.org/details/billiaurmoosaran0000unse

मूल्य : ₹ 60.00
ISBN : 978-93-5064-247-4
प्रकाशन वर्ष : 2014
बिल्ली और मूसारानी (कहानियां)
© राजपाल एण्ड सन्ज़
चित्रण : अनवर

राजपाल एण्ड सन्ज़
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट
दिल्ली-110 006
ईमेल: sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com

Price : ₹ 60.00
ISBN : 978-93-5064-247-4
Publication Year : 2014
BILLI AUR MUSARANI (Stories)
© Rajpal & Sons
Illustration : Anwar

Rajpal & Sons
1590, Madarsa Road, Kashmere Gate
Delhi-110 006
email: sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com

बिल्ली और मूसारानी

एक बार एक बूढ़ी बिल्ली अपने टूटे दांतों और झुकी कमर से लाचार हो चली थी। उसकी नाक के पास से ही दुष्ट चूहे दौड़ लगाते चले जाते, पर वह भूख से इतनी कमज़ोर हो गई थी कि झपटकर दबोचने तक चूहे खिलखिलाकर पार हो जाते। उसी बिल्ली का एक बेटा था, मां की बीमारी से ऊबकर वह जंगलों में दिन-रात बिता-बिताकर जंगली बिल्ला बन गया था। शहर की बिल्लियां उस जंगली बिल्ले को अपनी बेटी ब्याहने को तैयार नहीं हुईं तो चतुर बिल्ली के दिमाग़ में एक सूझ आई। चूहों की जमात मेला देखने जा रही थी। झट से एक चुहिया को पंजों से बिल्ली ने दबोच लिया। चूहों की भीड़ में हाहाकार मच गया, पर किसमें

साहस था जो मौत का सामना करे। बिल्ली के पंजों के नीचे चुहिया बेचारी का कलेजा घड़ी की तरह टिकटिक कर उठा तो मुंह के पानी को किसी भांति रोककर, हँस उठी बिल्ली—

खी-खी धिक-धिक

खी-खी धिक-धिक।

"म्याऊं-म्याऊं, हाय री प्यारी चुहिया! क्यों इतना डरती है? भला इस बुढ़ापे में तुझे खाकर धर्म बिगाड़ूंगी, पगली कहीं की! वह भी एकादशी के दिन। कांपना बन्द कर और बात सुन।"

चुहिया के डूबते प्राण लौटे। छोटे-छोटे कान फटफटाकर चुहिया बोली, "कहिए जीजी, सुन रही हूं!"

बिल्ली बोली, "अरी कहूं क्या, शरम से ज़बान ही नहीं खुलती। मेरा बेटा कल से खाना-पीना छोड़कर हठ बांधकर बैठा है कि ब्याह करेगा तो बेटी मूसारानी से। अगर मूसारानी नहीं मिली तो प्राण तज दूंगा, कहता है।"

चुहिया बोली, "हाय-हाय! ऐसी बात कौन सुनेगा, लाड़ों से पली दुलारी मेरी मूसारानी! उसका तो कलेजा ही 'म्याऊं सुनकर धक् कर उठेगा। फिर भला कहां आप शीशे का मुकुट और कहां मूसा धूल की ठीकरी!"

बिल्ली ने पंजा धीरे से दबाया, "इसी को तो कहते हैं चूहे की बुद्धि! यह तो नहीं सोचती कि बड़े रिश्ते से बंधकर तर जाएगी तेरी तुच्छ जाति। सब बिल्ले-बिल्लियां समधियाने के रिश्ते से इष्ट-मित्र बन जाएंगी। चूहेदानी और चूहामार गोलियों के डर के सिवाय और कोई भय नहीं सताएगा तुम्हें। और क्या चाहती है मेरी पियारी दुलारी मूसारानी!"

चुहिया खिसियाकर बोली, "क्षमा कर बहिन! तुम कल बारात लेकर मेरे बिल पर आ जाना, मैं अपनी लड़की ब्याह दूंगी।"

बिल्ली ने पंजा छोड़ दिया। चुहिया फिर-फिरा कर भाग गई। बुद्धि होती तो फिर दुष्ट बिल्ली के चक्कर में न पड़ती, पर चुहिया को भी लालच हो आया। बेटी को बड़ा घर मिलेगा, बड़ा वर मिलेगा, खूब चोरी की दूध-मलाई मिलेगी। वह मारे घमंड के आसमान में उड़कर हवा से बातें करने लगी। चूहों की बिरादरी में तड़क-भड़क से बांके दूल्हे के स्वागत की तैयारियां होने लगीं। मूसारानी ने मल-मल कर नहाया, चंदन-केसर का उबटन लगाया और चटपट मेंहदी रचाकर पीली साड़ी बांध कर तैयार हो गई। मूसारानी के मामा का घर था बनिये की दुकान में। बस, फिर क्या था, बनिये की दुकान की बढ़िया बासमती का बोरा

काटकर वह बासमती लाया, चीनी के बोरे में छेद कर चीनी लाया। छोटी इलायची, केसर, लौंग और बादाम की खूशबू से गमक उठा चुहिया का बिल! हरी-हरी पत्तियों के बंदनवार से बिल को सजा दिया गया। रंगीन झंडियां कुतर कर ले आए चूहे। दरजी की दुकान से रंग-बिरंगी रेशमी कतरनों के लहंगे-दुपट्टे सिल गए। छम-छम करती चुहियों की रंग-बिरंगी भीड़ से छोटा-सा बिल भर गया।

उधर जंगली बिल्ले को बुलाकर बिल्ली ने खूब संवारा। बढ़े नाखून काट दिये, मूंछों को संवारकर चमेली का तेल डाला। कंजी भयानक आंखों में काजल के रसीले डोरे डाल कर नज़र उतारी। बेटा बोला-

"म्याऊं-म्याऊं
किसे खाऊं?"

बिल्ली ने बेटे को पुचकारा, "बेटे-बेटे! सबर कर, सबर कर। बारात पहुंचते ही तेरी पांचों अंगुलियां घी में ही होंगी। सारी बस्ती के चूहे हैं, खूब छककर खाना।"

बाराती आ गए, लाल बिल्ले, चिबिल्ले बिल्ले, पीले बिल्ले। आते ही बोले-

"भूख भूख-
भारी भूख।"

बिल्ली ने बड़े आदर से सबको बिठाया और बोली, "सबर-सबर, थोड़ा सबर। बारात पहुंचते ही पांचों अंगुलियां घी ही घी में।"

"दाहिने चूहे
बाएं चूहे

पूरब चूहे
पश्चिम चूहे
उत्तर चूहे, दक्खिन चूहे
जितनी इच्छा उतने खाओ
जितनी भूख उतना पाओ।"

बस फिर क्या था, बिल्ले दादा की बारात चली ढमाढम पीं-पीं-पीं।

झक्कर झम झक्कर झम
पीं-पीं-पीं-पीं।

बारात बिल के पास पहुंची। छोटे-बड़े, लम्बे-मोटे चूहे बारात की आगवानी को बढ़े। पीली साड़ी में लजाती, मुस्कराती हाथ में चमेली का हार लिए मूसारानी बढ़ी। पर जंगली बिल्ले को कहां धैर्य रहता। वह था भूखा। बोला-

म्याऊं म्याऊं
अम्मा, दुल्हन खाऊं
या न खाऊं?"

फिर क्या था, चुहिया, मूसारानी, चूहे मामा, दादा, काका और बाबा सब भागकर बिल में छिप गए। बिल्ली बिल के द्वार पर खड़ी होकर मीठे स्वर में बोली,

"समधिन, डर क्यों गई। मेरा बेटा तो गा रहा था।"

समधिन चुहिया ने उससे मीठे स्वर में उत्तर दिया, "हां बहिन! तुम्हारे बेटे का गाना हम बिल के भीतर ही से सुन रही हैं। बाहर आकर सुनने पर हमें प्राणों का मूल्य चुकाना पड़ेगा।"

पछताकर बिल्ली के बाराती भूखे ही लौट गए।

घमंडी हाथी और बुद्धिमान् चूहा

तराई के घने जंगल में एक घमंडी हाथी रहता था। इधर-उधर के खेतों में वह स्वच्छन्द विचरता और नित्य नये गन्नों का रस पी-पीकर दिन-रात मस्त रहता। उसकी सूंड तो लम्बी और सुडौल थी ही, पर दांतों का ही उसे विशेष घमंड था। तराई में पचासों हाथी थे पर ऐसे चिकने, मुड़े और सजीले दांत किसी के भी नहीं थे। हाथी का नाम था गजैसिंह। जिधर गजैसिंह झूमता निकल जाता त्राहि-त्राहि मच जाती। मार्ग में न जाने कितने खरगोश, बिल्ले, चूहे कुचलकर वह किसी खेत में पहुंच जाता और दाएं-बाएं घूम-घूमकर गन्ने तोड़-ताड़ खेत उजाड़ देता। दूर-दूर से शिकारी उसे मारने आते पर उचककर सूंड से कार सहित उन्हें पटक देता गजैसिंह। जैसे-जैसे गजैसिंह का शरीर बढ़ने लगा वैसे-वैसे उसका आतंक

भी बढ़ता गया। जंगल के छोटे-मोटे जानवर कुचलते-दबते मुट्ठी भर रह गए। उन्हीं में एक अत्यन्त बुद्धिमान चूहा था। चूहे के ननिहाल का बिल एक प्रसिद्ध शास्त्री जी की पाठशाला में था। पंडित जी पढ़ाते और बिल में बैठा चूहा सुनता। इसी तरह चारों वेद पढ़कर जब बिल से चूहा निकला तो जंगल के सब जानवर उसकी बुद्धि का लोहा मान गए। विवाह, जनेऊ, पूजा-पाठ सबमें पंडित मूसादत्त को बुलाया जाता। यहां तक कि शेर बब्बर और भालू भी मूसादत्त को देखकर बड़े आदर से कहते, "गुरु! पायलागन।" "कल्याण हो बेटा!" कह मूसादत्त पोथी-पत्रा लेकर चले जाते। मूसादत्त भी थे विनय की साक्षात् मूर्ति। बोलते तो मिश्री घोलते, हँसते तो मोती बिखेरते।

एक दिन पंडित मूसादत्त लाल वस्त्र में पोथी लपेटकर कहीं नवदुर्गा स्थापना करने जा रहे थे कि मार्ग में मिल गए झूमते-झामते गजैसिंह। उसने देखा त्रिपुंड लगाए, धोती की लांग देकर एक छोटा चूहा चला जा रहा है। न दाएं देखता है न बाएं, न गजैसिंह को पायलागन कहता है, न झुकता है। गजैसिंह की सूंड क्रोध से फड़क उठी-"ऐरे मूसिया! देखता नहीं इधर किसकी सवारी आ रही है? मौत आ गई है तेरी। एक पैर का नाखून भी रख दूं तो तेरी आंतें गुब्बारे-सी उठती नज़र आएंगी।"

"महाराज! क्षमा कीजिए।" मूसादत्त सड़क के किनारे खड़ा होकर बोला, "मैंने आपको देखा नहीं।"

गजैसिंह गरजा, "देखा नहीं, मैं कोई चींटी था जो तू मुझे नहीं देखता? नालायक! जानता है मैं कौन हूं?"

मूसादत्त निडर होकर बोला, "हां महाराज! मैं तो इतना जानता हूं कि जिस परमपिता ने आपकी यह विशाल देह बनाई उसी ने मेरी भी यह छोटी देह बनाई है। एक दिन आपको भी मृत्यु दबा लेगी और मुझे भी। आप व्यर्थ घमंड कर रहे हैं प्रभु!"

गजैसिंह क्रोध से चिंघाड़ उठा, "मूर्ख! तुच्छ पशु!! मुझे घमंडी कहता है। हो जा तैयार मौत के लिए।"

मूसादत्त फिक-फिक कर हँस उठा, "गजराज ! ईश्वर ने आपको शरीर का ही बली बनाया है, बुद्धि का नहीं। क्रोध ने आपको अंधा कर दिया है और घमंड ने मूर्ख।"

गजैसिंह ने चार पेड़ तोड़कर पटक दिए और क्रोध से कांपता हुआ चूहे की ओर बढ़ा। मूसादत्त फुर्ती से उछल कर एक मित्र के बिल में घुस गए। बड़ी देर तक पेड़ों को तोड़, चट्टानों को तोड़ गजैसिंह, खीझकर घर चला गया।

पंडित मूसादत्त ने सोचा, गजैसिंह का घमंड बहुत बढ़ गया है, उसे नीचा दिखाना ही

होगा। धीरे-धीरे रात-दिन एक कर मूसादत्त चुपचाप गजैसिंह के नित्य-मार्ग में एक खाई खोदने लगे। खुटर-खुटर खुट-खुट, खुटर-खुटर खुट-खुट-! धीरे-धीरे थोड़ी मिट्टी खुदी, थोड़े कंकड़ निकले—बढ़ते-बढ़ते एक दिन खाई खुदकर पूरी तैयार हो गई। पत्तों से ढांक-ढूंककर मूसादत्त ने वह बहुत सुन्दर बना दी और वहां चार-पांच हरे-मीठे गन्ने सजाकर रख दिए। नित्य की भांति गजैसिंह झूमझाम कर निकले। धम से पैर पड़ा और हाथीराम नीचे, चारों खम्भे से पैर ऊपर-आधा दांत टूट गया, सूंड में पत्थर गड़ गए, कीचड़ और गोबर से लथपथ हो गए वीर गजैसिंह।

'क्यों रे गजुवा! देखता नहीं किसकी सवारी आ रही है?' पंडित मूसादत्त त्रिपुंड लगाए, सफेद चिट धोती की लांग लगाकर खाई के पास खड़े होकर बोले। साथ में तराई भर के चूहे खीसें निपोड़ रहे थे। बेचारे गजैसिंह चुपचाप खड़े कांखते-कराहते

रहे। उनके घमंड के कारण पूरे जंगली जानवर उनसे चिढ़ते थे। अब उन्हें कौन बाहर निकालता।

पंडित मूसादत्त आखिर थे-चारों वेद पढ़े। दया से पूर्ण, शत्रुता भूलकर बोले, "गजैसिंह, देखा न घमंडी का सिर हमेशा नीचा होता है। ईश्वर किसी को शरीर का बल देता है, किसी को बुद्धि का। कहो, मान गए या नहीं?" गजैसिंह ने बड़े कष्ट से कहा, "महाराज! ठीक कहते हैं। मैंने अपने घमंड का फल पा लिया है, अब क्षमा कीजिए, पंडित जी!"

पंडित जी ने झटपट अपनी पूरी सेना बुलाई, सबने खोद-खोदकर दूर-दूर से मिट्टी लाकर खाई फिर पूर दी। हिल-मिलकर गजैसिंह को धकेल-धकेलकर सीधा किया। गजैसिंह ने सूंड को पंडित मूसादत्त के पैरों पर पटक-पटक कर क्षमा मांगकर कहा, "महाराज, आज से मैं आपका दासानुदास हूं। बुद्धिबल ही सबसे बड़ा बल है, सबसे बड़ा।" पंडित मूसादत्त ने उसका अपराध क्षमा कर दिया। उस दिन से अपनी सब हेकड़ी भूलकर गजैसिंह अन्य जंगली जानवरों के साथ बड़े प्रेम से रहने लगा।

पिद्दी और हाथी

छोटी-सी "पिद्दी" —भूरी-भूरी सफेद छींटदार, छोटी-छोटी मोती-सी चमकदार आंखें-फर्र-फर्र उड़कर डालियों पर बैठती और तिनके चुन-चुनकर घोंसला बनाती, चिड्डा ले आता धुनके के यहां से रुई, दरजी से कतरनें और एक दिन आलीशान घोंसला चकचक-झकझक कर उठा। ऐसा प्यारा-प्यारा कि बादशाह भी देखे तो तखत छोड़कर बैठने को ललचा जाए! लाल-पीली कतरनों की

छोटी-छोटी झंडियां लगाकर पिद्दी महा आनन्द से गाने लगी और थोड़े ही दिन बाद जब छोटा-सा चमकदार घोंसला नन्हीं-नन्हीं चींचीं की आवाज़ों से गूंज उठा तो पिद्दा दौड़कर पूरी बिरादरी को न्यौत आया—तित्तिरी तित्त, तित्तिरी तित्त करता तीतरों का जोड़ा, टिट्टी टिट, टिट्टी टिट करती पहाड़ी टिट्र्यां, घुघु घूं घुघु घूं कर घुघती बधाइयां देने दौड़ पड़े। कोई चोंच में दबाकर नई जच्चा के लिए हरी-हरी गेहूं की बाल लाया था, कोई ऊन का टुकड़ा, कोई धान की बाली तो कोई घोंसले में बिछाने को सूखी घास। आ-हा-हा बच्चे भी क्या थे कि खिलौना, एक तो पिद्दी ही थी महासुन्दरी फिर अकड़ू गर्दन और शाही ठसके वाला पिद्दा ही क्या कम था। जब मां और बाप ऐसे सुन्दर तो भला बच्चे क्यों न प्यारे-प्यारे

होते। लिहाज़ा तीन-तीन सुन्दर-से पिद्दे दिन-भर घोंसले में चहकने लगे। दिन-भर पिद्दी घूम-घूमकर बढ़िया चबैना बीन लाती, पिद्दा घर पर बच्चों की रखवाली करता, दूसरे दिन पिद्दी घर का पहरा करती और पिद्दा दाना बीनने चल पड़ता। एक दिन बच्चे बोले, "मां-मां! तुम भी दाना बीनने चली जाओ न बाबा के साथ, हम अपना पहरा दे लेंगे।"

पिद्दी बोली, "वारी जाऊं प्यारो! पर अगर बदज़ात कौआ आ गया तो ?"

"तो क्या हुआ, हम उसके काले-काले परों को नोंच डालेंगे।" सबसे बड़ा बोला।

"हम अपनी तीखी चोंच से उसकी आंखें निकालकर दूर भगा देंगे।" दूसरा बोला।

"हम उसके पैरों में अपनी चोंच चुभाकर लंगड़ा बना देंगे।" सबसे छोटा चहका और हँसते-हँसते चिड़िया लोट गई। बोली, "अच्छा मेरे बहादुर बेटो! मैं भी दाना चुगने जाती हूं। आज सेठजी के यहां मूंग की दाल सूख रही है, दूर भी नहीं जाना पड़ेगा और कहो तो रामगढ़ में भट्ट जी के बगीचे से सेब ले आऊं?"

"हां अम्मा सेब, प्यारी अम्मा, सेब!" तीनों ने अपने नन्हें-नन्हें पंजों की तालियां बजाईं और नाचने लगे।

प्यारी अम्मा सेब लेने क्या गई कि घोंसले पर मौत मंडरा गई। सूंड़ उठाता, खम्भे से थम्मक-थैया पैरों को मस्ती से पटकता महाबलशाली हाथी उधर से निकल गया, और पिद्दी के बहादुर बेटों ने देखा तो किलक उठे। "देखो-देखो पहाड़," एक बोला। "हट, भैंसा है भैंसा," दूसरे ने कहा। "चल हट, आकाश का काला बादल उतर आया है," सबसे छोटे ने कहा।

हाथी ने आंखें उठाईं और देखा, तीन छोटे-से पिद्दे उसे देख-देखकर हँस रहे हैं। ऐसा साहस ? गजराज ने उठाई सूंड और पटक दिया पेड़। तीनों पिद्दे ऐसे चटक गए जैसे

चुटकी से बताशे चूर कर दिए हों। हाथी जा ही रहा था कि पिद्दी आ गई। उसके प्यारे-प्यारे राजदुलारे ज़मीन पर मरे पड़े थे। वह सिर धुन-धुनकर रोने लगी। पिद्दा आया, उसने भी देखा और सिर थामकर बैठ गया। पिद्दी ने तीनों की लाशों को गोदी में उठाया और नदी में डूबने चली। जब बेटे ही न रहे तो वह भला जी कर क्या करेगी ?

"मेरी प्यारी पिद्दी! च्च-च्चच्च-च्च।" पिद्दा बोला, "तू डूबेगी तो मैं भी डूब जाऊंगा और मस्त हाथी से बदला कौन लेगा, बोल तो सही? चल घर, हम दोनों अपने प्यारे बहादुर बेटों की मौत का बदला तो ले लें।" चुमकार-पुचकारकर वह पिद्दी को लौटा लाया। रोज़ पिद्दी कहती, "प्यारे पिद्दे! बदला कब लोगे?"

और पिद्दा बेचारा सिर लटकाकर चुप रह जाता, 'कहां राजा भोज और कहां गंगुआ तेली!' पर वह भी था आन का पक्का, दिन-रात नई-नई तरकीब सोचता। एक दिन उसका परम मित्र कठफोड़िया आया। चट से दौड़कर बाजरे की फलियां लेकर पिद्दा कठफोड़िया के सामने रखकर बोला, "मित्र! आज यही रूखा-सूखा खाकर पानी पी लो। हमारे घर में तो चूल्हा भी नहीं जलता।" टप-टप उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे।

कठफोड़िया ने जब उसके दुर्भाग्य की कहानी सुनी तो बोला, "चिन्ता मत कर पिद्दे! क्या तुम मेरे बचपन के साथी नहीं हो? धिक्कार है मेरे जीवन को जो मित्र के काम नहीं आया। अकेले तो मनुष्य का हाथ भी एक ही हाथ की दूरी तक पहुंचता है, पर मित्र का सहारा पाकर वह कितनी दूर पहुंच जाता है। ऐसे ही क्या हम पक्षियों में सच्चे मित्र सब उजड़ गए हैं? उठो, आंखें पोंछो, चलो मेरे साथ। यहां पास के तालाब में मेरा एक परम मित्र मेंढक और उस झाड़ी में भयंकर विषधर अलंगार (पहाड़ी बर्रा) रहता है, उसके काटे का मंतर नहीं है, मेरे दोस्त ! चलो अभी।"

पिद्दे ने आंखें पोंछीं और दोनों उड़ लिए। मेंढक और अलंगार दोनों ने पूरी घटना सुनी तो मेंढक ने कहा, "अवश्य-अवश्य, मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगा।"

अलंगार बोला, "कहो तो काट खाऊं उस हाथी के बच्चे को। वह है किस खेत की मूली। पर हां, भाई! एक बात याद आई... ।" एकाएक सोच में पड़कर वह चुप-सा रह गया।

"क्या बात है भाई! क्या विष का पुड़ा ख़तम कर बैठे हो ?" कठफोड़िया ने पूछा।

"नहीं-नहीं, पर वह हाथी मेरे ससुराल के गांव का है। मेरी पत्नी उसको दाज्यू

कहती है, इस रिश्ते से वह मेरा साला होता है, भाई।" लजाकर वह बोला।

"ओहो इतनी-सी बात," कठफोड़िया बोला, "तुम उसको काटना मत यार ! कान में अपनी यह वीणा बजा-बजाकर सुला देना। बस, और सब मैं कर लूंगा।"

"हां-हां, क्यों नहीं, क्यों नहीं।" कहकर अलंगार उनके साथ हो लिया।

एक घने झुरमुट में अपनी पहाड़-सी देह फैलाकर हाथी गुनगुना रहा था। अलंगार ने चुपके से कान के पास अपनी वीणा छेड़ दी। क्या-क्या कोमल स्वर लगाए कि हाथी झूम गया। पलकें बन्द हुईं और खर्राटे भरने लगे हस्तिराज !

फिर क्या था। कठफोड़िया ने अपनी पैनी चोंच से उसकी दोनों आंखें खोद-खोद डालीं ! अंधा हाथी पीड़ा से चिंघाड़ उठा।

“हाय, यह कैसी भयंकर पीड़ा है।” वह चिंघाड़कर बोला, ‘कहां गईं मेरी आंखें, प्यारी आंखें चिं-चिं-चीं-चीं-चिं-चिं-चीं-चीं।” अब ठीक उसके कान के पास फुदककर पिद्दी बोली-

“जहां गए मेरे प्यारे बच्चे,
वहीं गईं तेरी प्यारी आंखें।”

“कौन है यह ?” हाथी गरजकर बोला। खि-खि-खि-खि- कर खिलखिलाकर पिद्दी इधर-उधर भागने लगी। अंधा हाथी उसको पकड़ने भागता पर कभी पहाड़ से टकराता, कभी पेड़ से। उसकी विशाल देह लहूलुहान हो गई तो मेंढक पास आकर बोला, “महाराज! हाय-हाय, किस पापी ने आपकी यह दुर्दशा कर दी? सत्यानाश हो उसका। आइए सरकार! मेरे पोखर में नहाकर यह रक्त धो डालिए। आइए, मेरे पीछे-पीछे।” पीड़ा और प्यास से व्याकुल हाथी उसके पीछे-पीछे चल दिया। चतुर मेंढक उसे एक ऊंची चट्टान पर ले जाकर बोला, “यह रहा पोखर महाराज! अहा-हा, क्या शीतल जल हिलोरें ले रहा है; लगाइए डुबकी, महाराज!”

अंधा हाथी कूदा तो झड़-झड़-झड़ाम-हड्डी-हड्डी चूर हो गई।

“धन्यवाद, मेरे प्यारे मित्रो!” पिद्दी और पिद्दा खुशी से नाच उठे। “ऐसे ही इस घमंड से चूर हाथी ने मेरे नन्हें बेकसूर बच्चों को भी पटका था।” पिद्दी बोली, “ईश्वर के यहां देर है पर अंधेर नहीं है।” परम संतोष से पर फड़फड़ाते दोनों अपने घोंसले में लौट आए।

TORONTO PUBLIC LIBRARY
37131 184 871 259

शिवानी (17 अक्तूबर 1923 - 21 मार्च 2003) हिन्दी की जानी-मानी लेखिका हैं। उनका पूरा नाम था गौरा पंत। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक उपन्यास, कहानियां और यात्रा-वृत्तांत लिखे। हिन्दी साहित्य में उनके योगदान के लिए 1982 में उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। बच्चों के लिए *सूखा गुलाब, स्वामीभक्त चूहा, राधिका सुन्दरी, बिल्ली और मूसारानी* उनकी लोकप्रिय पुस्तकें हैं।

1912-2012
100 वर्षों की
श्रेष्ठ प्रकाशन परम्परा
राजपाल
₹60
बाल कहानियाँ
9789350642474

T2-CGG-130